

Tulsi Chalisa

|| तुलसी चालीसा ||

|| दोहा ||

श्री तुलसी महारानी, करूं विनय सिरनाय ।
जो मम हो संकट विकट, दीजै मात नशाय ॥

|| चौपाई ||

नमो नमो तुलसी महारानी । महिमा अमित न जाए बखानी ॥
दियो विष्णु तुमको सनमाना । जग में छायो सुयश महाना ॥

विष्णु प्रिया जय जयति भवानि । तिहूं लोक की हो सुखखानी ॥
भगवत पूजा कर जो कोई । बिना तुम्हारे सफल न होई ॥

जिन घर तव नहीं होय निवासा । उस पर करहिं विष्णु नहीं बासा ॥
करे सदा जो तव नित सुमिरन । तेहिके काज होय सब पूरन ॥

कातिक मास महात्म तुम्हारा । ताको जानत सब संसारा ॥
तव पूजन जो करैं कुंवारी । पावै सुन्दर वर सुकुमारी ॥

कर जो पूजा नितप्रीति नारी । सुख सम्पत्ति से होय सुखारी ॥
वृद्धा नारी करै जो पूजन । मिले भक्ति होवै पुलकित मन ॥

श्रद्धा से पूजै जो कोई । भवनिधि से तर जावै सोई ॥
कथा भागवत यज्ञ करावै । तुम बिन नहीं सफलता पावै ॥

छायो तब प्रताप जगभारी । ध्यावत तुमहिं सकल चितधारी ॥
तुम्हीं मात यंत्रन तंत्रन में । सकल काज सिधि होवै क्षण में ॥

औषधि रूप आप हो माता । सब जग में तव यश विख्याता ॥
देव रिषी मुनि और तपधारी । करत सदा तव जय जयकारी ॥

वेद पुरानन तव यश गाया । महिमा अगम पार नहीं पाया ॥
नमो नमो जै जै सुखकारनि । नमो नमो जै दुखनिवारनि ॥

नमो नमो सुखसम्पत्ति देनी । नमो नमो अघ काटन छेनी ॥
नमो नमो भक्तन दुःख हरनी । नमो नमो दुष्टन मद छेनी ॥

नमो नमो भव पार उतारनि । नमो नमो परलोक सुधारनि ॥
नमो नमो निज भक्त उबारनि । नमो नमो जनकाज संवारनि ॥

नमो नमो जय कुमति नशावनि । नमो नमो सब सुख उपजावनि ॥
जयति जयति जय तुलसीमाई । ध्याऊं तुमको शीश नवाई ॥

निजजन जानि मोहि अपनाओ । बिगड़े कारज आप बनाओ ॥
करूं विनय मैं मात तुम्हारी । पूरण आशा करहु हमारी ॥

शरण चरण कर जोरि मनाऊं । निशदिन तेरे ही गुण गाऊं ॥
करहु मात यह अब मोपर दया । निर्मल होय सकल ममकाया ॥

मांगू मात यह बर दीजै । सकल मनोरथ पूर्ण कीजै ॥
जानूं नहीं कुछ नेम अचारा । छमहु मात अपराध हमारा ॥

बारह मास करै जो पूजा । ता सम जग में और न दूजा ॥
प्रथमहि गंगाजल मंगवावे । फिर सुंदर स्नान करावे ॥

चंदन अक्षत पुष्प चढ़ावे । धूप दीप नैवेद्य लगावे ॥
करे आचमन गंगा जल से । ध्यान करे हृदय निर्मल से ॥

पाठ करे फिर चालीसा की । अस्तुति करे मात तुलसी की ॥
यह विधि पूजा करे हमेशा । ताके तन नहीं रहै क्लेशा ॥

करै मास कार्तिक का साधन । सोवे नित पवित्र सिध हुई जाहीं ॥
है यह कथा महा सुखदाई । पढ़ै सुने सो भव तर जाई ॥

॥ दोहा ॥

यह श्री तुलसी चालीसा पाठ करे जो कोय ।
गोविन्द सो फल पावही जो मन इच्छा होय ॥